सीबीएसई कक्षा - 12 हिंदी कोर आरोह

पाठ – 07

बादल राग

पाठ के सार:-

निराला की यह कविता अनामिका में छह खंडों में प्रकाशित है। यहाँ उसका छठा खंड लिया गया है| आम आदमी के दु:ख से त्रस्त कवि परिवर्तन के लिए क्रांति रुपी बादल का आह्वान करता है| इस कविता में **बादल क्रांति या विप्लव का प्रतीक** है। कवि विप्लव के बादल को संबोधित करते हुए कहता है **कि जन मन-की आकांक्षाओं से भरी** तेरी नाव समीर रूपी सागर पर तैर रही है। अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया तैरती दिखाई देती है। **संसार के लोगों के हृदय दग्ध हैं (दु:खी)**। उन पर निर्दयी विप्लव अर्थात् क्रांति की माया फैली हुई है। **बादलों के गर्जन से पृथ्वी के गर्भ में सोए अंकुर बाहर निकल आते हैं**। अर्थात शोषित वर्ग सावधान हो जाता है और **आशा भरी दृष्टि से क्रांति की ओर देखने** लगता है। उनकी आशा क्रांति पर ही टिकी है। बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा में बड़े बड़े-पर्वत वृक्ष घबरा जाते हैं। उनको उखड़कर गिर जाने का भय होता है| क्राति की हुंकार से **पूँजीपति घबरा उठते हैं** वे दिल थाम कर रह जाते हैं। **क्रांति को तो छोटे-छोटे लोग बुलाते हैं।** जिस प्रकार छोटे छोटे पौधे हाथ हिलाकर-**बादलों के आगमन का स्वागत करते हैं** वैसे ही शोषित वर्ग क्रांति के आगमन का स्वागत करता है।

छायावादी कवि निराला **साम्यवादी प्रभाव** से भी जुड़े हैं। **मुक्त छंद** हिन्दी को उन्हीं की देन है। **शोषित वर्ग की समस्याओं को समास करने** के लिए **क्रांति रूपी बादल का आह्वान** किया गया है।